गुनाह का आग़ाज़

gunāh kā āġhāz

The Beginning of Sin

(Urdu—Hindi script)

© 2022 Chashma Media.
published and printed by
Good Word Communication Services Pvt. Ltd.
New Delhi, INDIA

Bible text is from UGV.
illus.: https://sweetpublishing.com &
https://www.fishnetbiblestories.com

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

बुराई किस तरह शुरू हुई?

शुरू में सब कुछ बहुत अच्छा था। हज़रत आदम और हव्वा बाग़े-अदन में बस्ते थे। अल्लाह ने यह बाग़ ख़ासकर इनसान के लिए लगाया था। उसने हज़रत आदम को यह ज़िम्मेदारी दी थी कि वह इसकी बाग़बानी करे, उसे ठीक-ठाक रखे। हज़रत आदम को जानवरों को नाम देने की ज़िम्मेदारी भी दी गई थी। अल्लाह ने इन कामों में इनसान को पूरी आज़ादी दी थी क्योंकि उसने उसे इस क़ाबिल बनाया था। सबसे बढ़कर यह कि इनसान को बाग़ में अल्लाह की क़ुरबत हासिल थी। ख़ालिक़ के साथ गहरा रिश्ता था। कोई चीज़ बीच में हाइल नहीं थी जो उन्हें जुदा कर सके, जिससे ताल्लुक़ बिगड़ जाए। इससे बेहतर क्या हो सकता था?

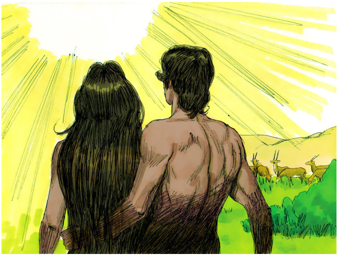

ख़ुदा ने हज़रत आदम और हव्वा को सिर्फ़ एक हुक्म दिया था जिसे पूरा करना आसान ही था : एक दरख़्त का फल नहीं खाना था। चूँकि उन्हें किसी भी चीज़ की कमी नहीं थी इसलिए यह हुक्म मानना आसान होना चाहिए था।

ग़रज़ बाग़े-अदन हर लिहाज़ से निहायत उम्दा और शानदार था।

अब आइए हम तौरेत शरीफ़ में पढ़ें कि इस अज़ीम इब्तिदा के बाद क्या हुआ :

गुनाह का आग़ाज़

साँप ज़मीन पर चलने-फिरनेवाले उन तमाम जानवरों से ज़्यादा चालाक था जिनको रब ख़ुदा ने बनाया था। उसने औरत से पूछा, “क्या अल्लाह ने वाक़ई कहा कि बाग़ के किसी भी दरख़्त का फल न खाना?”

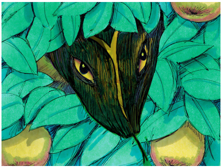

औरत ने जवाब दिया, “हरगिज़ नहीं। हम बाग़ का हर फल खा सकते हैं,सिर्फ़ उस दरख़्त के फल से गुरेज़ करना है जो बाग़ के बीच में है। अल्लाह ने कहा कि उसका फल न खाओ बल्कि उसे छूना भी नहीं, वरना तुम यक़ीनन मर जाओगे।”

साँप ने औरत से कहा, "तुम हरगिज़ न मरोगे, बल्कि अल्लाह जानता है कि जब तुम उसका फल खाओगे तो तुम्हारी आँखें खुल जाएँगी और तुम अल्लाह की मानिंद हो जाओगे, तुम जो भी अच्छा और बुरा है उसे जान लोगे।"

औरत ने दरख़्त पर ग़ौर किया कि खाने के लिए अच्छा और देखने में भी दिलकश है। सबसे दिलफ़रेब बात यह कि उससे समझ हासिल हो सकती है! यह सोचकर उसने उसका फल लेकर उसे खाया। फिर उसने अपने शौहर को भी दे दिया, क्योंकि वह उसके साथ था। उसने भी खा लिया।

लेकिन खाते ही उनकी आँखें खुल गईं और उनको मालूम हुआ कि हम नंगे हैं। चुनाँचे उन्होंने अंजीर के पत्ते सी कर लुंगियाँ बना लीं।

शाम के वक़्त जब ठंडी हवा चलने लगी तो उन्होंने रब ख़ुदा को बाग़ में चलते-फिरते सुना। वह डर

के मारे दरख़्तों के पीछे छिप गए। रब ख़ुदा ने पुकारकर कहा, “आदम, तू कहाँ है?”

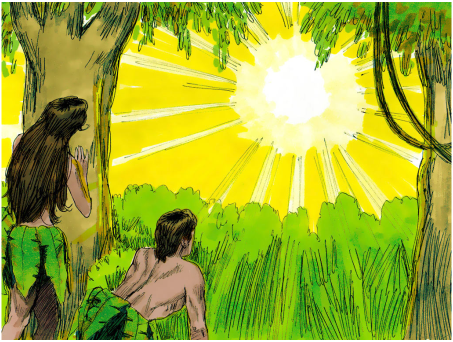

आदम ने जवाब दिया, “मैंने तुझे बाग़ में चलते हुए सुना तो डर गया, क्योंकि मैं नंगा हूँ। इसलिए मैं छिप गया।”

उसने पूछा, “किसने तुझे बताया कि तू नंगा है? क्या तूने उस दरख़्त का फल खाया है जिसे खाने से मैंने मना किया था?”

आदम ने कहा, “जो औरत तूने मेरे साथ रहने के लिए दी है उसने मुझे फल दिया। इसलिए मैंने खा लिया।”

अब रब ख़ुदा औरत से मुख़ातिब हुआ, “तूने यह क्यों किया?”

औरत ने जवाब दिया, “साँप ने मुझे बहकाया तो मैंने खाया।”

रब ख़ुदा ने साँप से कहा, “चूँकि तूने यह किया, इसलिए तू तमाम मवेशियों और जंगली जानवरों में लानती है। तू उम्र-भर पेट के बल रेंगेगा

और ख़ाक चाटेगा। मैं तेरे और औरत के दरमियान दुश्मनी पैदा करूँगा। उसकी औलाद तेरी औलाद की दुश्मन होगी। वह तेरे सर को कुचल डालेगी जबकि तू उसकी एड़ी पर काटेगा।”

सवाल

- **साँप ने हज़रत हव्वा से कहा, “क्या अल्लाह ने वाक़ई कहा कि बाग़ के किसी भी दरख़्त का फल न खाना?” अब ध्यान दें, क्या अल्लाह ने यह कहा था?**
  - ► हरगिज़ नहीं। यह झूठ था। लेकिन हव्वा ने उसकी बात मान लिया जिसका सीधा नतीजा यह निकला कि उसने ख़ुदा का हुक्म तोड़कर गुनाह किया।
- **फिर क्या हुआ?**
  - ► फिर हज़रत आदम ने भी यह हुक्म तोड़कर गुनाह किया।
- **फिर क्या हुआ?**
  - ► यह करते ही उन्हें महसूस हुआ कि वह नंगे हैं। उन्हें शर्म आई तो वह ख़ुदा से डरकर छिप गए।

    यह कितनी अफ़सोसनाक बात थी। पहले वह अल्लाह के बिलकुल क़रीब रहे थे, और उन्हें उसकी क़ुरबत से ख़ुशी महसूस होती थी। लेकिन अब वह उससे दहशत खाने लगे।

- **क्या इसमें अल्लाह तआला का कोई हाथ था?**
  - ► हरगिज़ नहीं। शर्म और दहशत उसी वक़्त पैदा हुई जब उन्होंने ख़ुदा का हुक्म तोड़कर गुनाह किया। उस वक़्त कुछ उनके और ख़ुदा के दरमियान हाइल हुआ, एक ऐसी चीज़ जिससे वह उससे जुदा हो गए। किताबे-मुक़द्दस इसे गुनाह कहती है।

    यूहन्ना रसूल फ़रमाते हैं कि गुनाह अल्लाह के अहकाम की हुक्मअदूली है,

    > जो गुनाह करता है वह शरीअत की ख़िलाफ़वरज़ी करता है। हाँ, गुनाह शरीअत की ख़िलाफ़वरज़ी ही है। (1 यूहन्ना 3:4)

    और यसायाह नबी फ़रमाते हैं,

    > हक़ीक़त में तुम्हारे बुरे कामों ने तुम्हें उससे अलग कर दिया, तुम्हारे गुनाहों ने उसका चेहरा तुमसे छिपाए रखा, इसलिए वह तुम्हारी नहीं सुनता। (यसायाह 59:2)

तब हज़रत आदम और हव्वा ने वह कुछ किया जो हम भी गुनाह करते वक़्त अकसर करते हैं। उन्होंने अपने गुनाहों को तसलीम न किया। न सिर्फ़ यह बल्कि उन्होंने दूसरों को क़ुसूरवार ठहराया। आदम ने कहा कि हव्वा ने मुझे बहकाया, और हव्वा ने कहा कि साँप ने मुझे बहकाया।

लेकिन अल्लाह इन जैसे बहाने क़बूल नहीं करता। हर एक ख़ुद ही ज़िम्मेदार है।

फिर रब ख़ुदा औरत से मुख़ातिब हुआ और कहा, “जब तू उम्मीद से होगी तो मैं तेरी तकलीफ़ को बहुत बढ़ाऊँगा। जब तेरे बच्चे होंगे तो तू शदीद दर्द का शिकार होगी। तू अपने शौहर की तमन्ना करेगी लेकिन वह तुझ पर हुकूमत करेगा।”

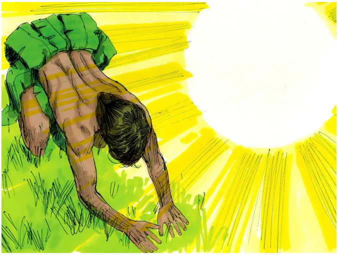

आदम से उसने कहा, “तूने अपनी बीवी की बात मानी और उस दरख़्त का फल खाया जिसे खाने से मैंने मना किया था। इसलिए तेरे सबब से ज़मीन पर लानत है। उससे ख़ुराक हासिल करने के लिए तुझे उम्र-भर मेहनत-मशक़्क़त करनी पड़ेगी। तेरे लिए वह ख़ारदार पौधे और ऊँटकटारे पैदा करेगी, हालाँकि तू उससे अपनी ख़ुराक भी हासिल करेगा। पसीना बहा बहाकर तुझे रोटी कमाने के लिए भाग-दौड़ करनी पड़ेगी। और यह सिलसिला मौत तक जारी रहेगा। तू मेहनत करते करते दुबारा ज़मीन में लौट जाएगा,

क्योंकि तू उसी से लिया गया है। तू ख़ाक है और दुबारा ख़ाक में मिल जाएगा।”

आदम ने अपनी बीवी का नाम हव्वा यानी ज़िंदगी रखा, क्योंकि बाद में वह तमाम ज़िंदों की माँ बन गई। रब ख़ुदा ने आदम और उसकी बीवी के लिए खालों से लिबास बनाकर उन्हें पहनाया।

उसने कहा, “इनसान हमारी मानिंद हो गया है, वह अच्छे और बुरे का इल्म रखता है। अब ऐसा न हो कि वह हाथ बढ़ाकर ज़िंदगी बख़्शनेवाले दरख़्त के फल से ले और उससे खाकर हमेशा तक ज़िंदा रहे।”

इसलिए रब ख़ुदा ने उसे बाग़े-अदन से निकालकर उस ज़मीन की खेतीबाड़ी करने की ज़िम्मेदारी दी जिसमें से उसे लिया गया

था। इनसान को ख़ारिज करने के बाद उसने बाग़े-अदन के मशरिक़ में करूबी फ़रिश्ते खड़े किए और साथ साथ एक आतिशी तलवार रखी जो इधर-उधर घूमती थी ताकि उस रास्ते की हिफ़ाज़त करे जो ज़िंदगी बख़्शनेवाले दरख़्त तक पहुँचाता था।

यह है तौरेत शरीफ़ का गुनाह के आग़ाज़ के बारे में बयान।

यों हज़रत आदम और हव्वा को बाग़े-अदन के ख़ूबसूरत माहौल और अल्लाह की क़ुरबत से निकलना पड़ा।

गुनाह की वजह से दुनिया पहले की तरह अच्छी न रही।

गुनाह का आग़ाज़ हुआ और हम जो इनसान हैं गुनाह करने में लग गए।

सवाल

- **हम इस बयान से ख़ुदा के बारे में क्या सीखते हैं?**
  - ► ख़ुदा पूरे तौर पर रास्त, सच्चा और मुक़द्दस है। उसमें गुनाह नहीं है, और वह गुनाह से नफ़रत रखता है। इसलिए वह लाज़िमी गुनाह की सज़ा देता है।

    यों यशुअ फ़रमाते हैं,

    > वह क़ुद्दूस और ग़यूर ख़ुदा है। वह आपकी सरकशी और गुनाहों को माफ़ नहीं करेगा। (यशुअ 24:19)

- **अल्लाह पहले ही फ़रमा चुका था कि क्या कुछ होगा अगर हज़रत आदम और हव्वा उसका हुक्म तोड़कर गुनाह करें। वह क्या था?**
  - ► उसने फ़रमाया था कि वह मर जाएँगे। क्योंकि मौत गुनाह का नतीजा है। यों पौलुस रसूल फ़रमाते हैं,

    > गुनाह का अज्र मौत है। (रोमियों 6:23)

    हर एक अपने ही गुनाहों के लिए ज़िम्मेदार ठहरता है।

यों तौरेत में लिखा है,

> वालिदैन को उनके बच्चों के जरायम के सबब से सज़ाए-मौत न दी जाए, न बच्चों को उनके वालिदैन के जरायम के सबब से। अगर किसी को सज़ाए-मौत देनी हो तो उस गुनाह के सबब से जो उसने ख़ुद किया है। (इस्तिसना 24:16)

अज़रा नबी भी जानते हैं कि हम सब गुनाहगार हैं और इसलिए अल्लाह के सामने क़ायम नहीं रह सकते। वह फ़रमाते हैं,

> तू ही आदिल है। [...] हम क़ुसूरवार हैं और तेरे सामने क़ायम नहीं रह सकते। (अज़रा 9:15)

- **क्या अल्लाह ने हज़रत आदम और हव्वा को फ़ौरन सज़ाए-मौत दी?**
  - ► नहीं।
- **क्यों नहीं?**
  - ► क्योंकि उसे उन पर तरस आया। उसने उनका नंगापन ढाँपने के लिए खालों से कपड़े बनाकर उन्हें पहनाया। जानवरों को मरना पड़ा ताकि उनकी शर्म को ढाँपा जाए। गो हज़रत आदम और हव्वा ख़ुद अपने गुनाहों के ज़िम्मेदार थे तो भी उनकी शर्म को बेक़ुसूर जानवरों से ढाँपा गया। यों पहली बार इनसान की ख़ातिर ख़ून बहाया गया।

    अल्लाह ने हज़रत आदम और हव्वा को एकदम सज़ाए-मौत न दी, लेकिन उनकी ज़िंदगी के साल महदूद हो गए। साथ साथ ज़िंदगी दुश्वार हो गई। हज़रत आदम और बाद के मर्दों को पसीना बहा बहाकर काश्तकारी करनी पड़ी। रोज़ की रोटी कमाने के लिए बड़ी मेहनत-मशक़्क़त करनी पड़ी। हज़रत हव्वा और बाद की औरतों को बच्चे जन्म देते वक़्त बहुत तकलीफ़ झेलनी पड़ी। पहले सब कुछ कितना अच्छा था, और अब सब कुछ कितना मुश्किल और दुख भरा हो गया था।

- **गो अल्लाह अब भी उनसे मुहब्बत रखता था तो भी उसने उन्हें फ़िरदौस से निकाल दिया। यह ज़रूरी था। क्यों?**
  - ► ताकि वह ज़िंदगी के दरख़्त का फल खाकर अबद तक ज़िंदा न रहें। वरना उन्हें अबद तक गुनाह की हालत में रहना पड़ता। इसी लिए ख़ुदा ने उन्हें बाग़े-अदन से निकाल दिया ताकि वह उसमें घुस न सकें।

    अब से हज़रत आदम और हव्वा अल्लाह की क़ुरबत में नहीं थे। अब से वह बराहे-रास्त उससे बात नहीं कर सकते थे। अब से वह बाग़े-अदन के ख़ुशगवार माहौल में नहीं रहते थे।

    सबसे अफ़सोसनाक बात यह थी कि गुनाह से वह अल्लाह से जुदा हो गए। नतीजे में न सिर्फ़ वह बल्कि तमाम इनसान अल्लाह से अलग हो गए हैं।

ख़ुदा के साथ उनका गहरा रिश्ता टूट गया था। उस वक़्त से इनसान अल्लाह से जुदा रहता है। गुनाह और शर्म हमारी विरासत में है, और हम यह हालत बदल नहीं सकते। जिस तरह हमें अपने माँ-बाप से बहुत-सी चीज़ें विरासत में मिलती हैं उसी तरह हम इस शर्म को भी विरासत में पाते हैं जो हमें अल्लाह से अलग कर देती है।

यों पौलुस रसूल फ़रमाते हैं,

> जब आदम ने गुनाह किया तो उस एक ही शख़्स से गुनाह दुनिया में आया। इस गुनाह के साथ साथ मौत भी आकर सब आदमियों में फैल गई, क्योंकि सबने गुनाह किया। (रोमियों 5:12)

हज़रत दाऊद बादशाह भी फ़रमाते हैं,

> यक़ीनन मैं गुनाहआलूदा हालत में पैदा हुआ। ज्योंही मैं माँ के पेट में वुजूद में आया तो गुनाहगार था। (ज़बूर 51:5)

हममें से कोई नहीं है जो अपने गुनाहों को छिपा सके। ख़ुदा सब कुछ जानता है। यों ज़बूर में लिखा है,

> ऐ अल्लाह, […] मेरा क़ुसूर तुझसे पोशीदा नहीं है। (ज़बूर 69:5)

- **क्या ख़ुदा से यह रिश्ता कभी बहाल किया जा सकता था? क्या कोई तरीक़ा है जिससे हम जो कमज़ोर और गुनाहगार हैं अल्लाह की क़ुरबत हासिल कर सकते हैं?**
  - ► अगर हम कामिल और बिलकुल बेगुनाह ज़िंदगी न गुज़ारें हम अल्लाह के हुज़ूर नहीं आ सकते। और यह तो नामुमकिन है। फिर भी हिम्मत हारने की ज़रूरत नहीं है। बेशक हम कुछ नहीं कर सकते, लेकिन ख़ुद अल्लाह ने एक मनसूबा बनाया जिससे हर इनसान का उसके साथ रिश्ता बहाल हो सकता है।

जो तौरेत में तफ़सील से गुनाह के आग़ाज़ के बारे में पढ़ना चाहे, वह पैदाइश 3 में यह पढ़े।